P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* (Part-1) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

वेदों में पशुओं की महत्ता कर्म एवं स्वभाव

कीर्ति शुक्ला
असिस्टेंट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
मानिकपुर, चित्रकूट, उ.प्र.

सारांश

चतुर्वेदों ने जीव सम्बन्धी व्याख्या करते हुए इनकी महत्ता को भी स्वीकार किया है। अथर्ववेद में 'पशु' शब्द का व्यापक अर्थ में प्रयोग किया गया है। 'पश्यति इति पशुः' जो देख सकते हैं अर्थात् दर्शन शक्ति है वे सभी पशु होते हैं।[1] इसमें मनुष्यों को भी पशु गिना गया है। पशु पॉच प्रकार के होते हैंः गाय, अश्व, पुरूष, अज, अवि(भेंड़)।[2]

यजुर्वेद तैत्तिरीय काठक एवं मैत्रायणी संहिताओं एवं शतपथ ब्राहम्ण में भी पॉच प्रकार के पशुओं का उल्लेख प्राप्त होता है।[3] काठक संहिता में पशुओं को दो भागों में विभक्त किया गया–(क) ग्राम्य पशु, (ख) आरण्य पशु। अथर्ववेद में ग्राम्य पशुओं को विश्वरूप और विरूप बताते हुए एकरूप कहा गया है।[4] तात्पर्य यह है कि पशु आकृति एवं रूप, रंग की दृष्टि से अनेक प्रकार के होते हैं परन्तु वे पशुत्व जाति की दृष्टि से एक रूप हैं। इनके कार्य एवं व्यवहार की दृष्टि से इनमें एकरूपता है। अथर्ववेद[5], शतपथ ब्राम्हण, एतरेप ब्राम्हण[6] में सात ग्राम्य पशुओं एवं शतपथ ब्राम्हण में [7] सात आरण्यक पशुओं का भी उल्लेख किया गया है। यजुर्वेद एवं तैत्तिरीय संहिता में पशुओं के तीन अन्य प्रकार से भेद किये गये हैंः– (क) 'एकशफ' अर्थात् एक खुर वाले जैसे– अश्व, गर्दभ आदि। (ख) क्षुद्र–छोटे पशु जैसे–भेंड, बकरी आदि। (ग) आरण्य–जंगल में रहने वाले अर्थात् सिंह आदि।[8] इसी प्रकार तांडय ब्राम्हण में आठ खुर वाले पशुओं का भी उल्लेख किया गया हैं जिन्हें–'अष्टशफाः' कहा गया है।[9]

मुख्य शब्द : चतुर्वेदों, गाय, अश्व, पुरूष, अज, एकशफ

प्रस्तावना

वेंदों में जहॉ एक ओर पशु–पक्षियों का उल्लेख किया गया है वहीं दूसरी ओर इनके गुण, कर्म एवं स्वभाव का भी वर्णन मिलता है। गाय के महत्व का विराट रूप में वर्णन करते हुए इसे विश्वरूप और सर्वरूप कहा गया। इसमें सभी देवों का निवास स्थान है।[10] गाय के गुणों की सत्ता बताते हुए उसे–वर्चस(कान्ति), तेज, भग(ऐश्वर्य), यश, पयस्(दूध), रस(सरसता) से युक्त अवध्य कहा गया है। शतपथ ब्राम्हण में गाय को पोषक तत्व प्रदाता भी कहा गया है। गाय नवजात वत्स को अत्यधिक प्रेम करती है। शतपथ ब्राम्हण का कथन है कि पशु देखकर नहीं अपितु सूँघकर वस्तु को पहचानते हैं और भक्ष्य–अभक्ष्य का निर्णय भी इसी से करते हैं।[11] ऋग्वेद में मोर के नृत्य व उसके पंखों की सुन्दरता का वर्णन किया गया है।[12] मोरनी के गुणों की प्रशंसा करते हुए ऋग्वेद एवं अथर्ववेद में कहा गया है कि मोरनी सॉप के विष को चूस लेती है और उसके टुकड़े–टुकड़े कर देती है।[13] यजुर्वेद में तोता मैना की विशेषता का वर्णन करते हुए यह बताया गया है कि तोता (शुक) और मैना (शारि) में मनुष्य की तरह बोलने की योग्यता होती है।[14] यजुर्वेद [15] में कोयल की वाणी की मधुरता के साथ इसकी कामोद्दीपकता का गुण भी बताया गया है। कबूतर भी कामी पक्षी की तरह कबूतरी को छेड़ता हैं अर्थात् यह भी कामी पक्षी है।[16] उल्लू की आवाज को कटु, अशुभ, एवं प्रकाश से डरने और दिन में न देखसकने के गुणों को भी वेदों में वर्णित किया गया है।[17] श्येन(बाज) को सबसे तीव्र गति वाला होने के कारण इसे 'मनोजवाः'[18] (मन के तुल्य गति वाला) अर्थात् जिस प्रकार जितनी तीव्र गति से मन कार्य करता है उतनी ही गति से बाज भी कार्य करता है। यह बहुत दूर तक देख सकता है तथा पक्षियों पर आक्रमण कर उन्हें पकड़ता है। इसलिए छोटे पक्षी इससे डरते हैं। यह सभी पक्षियों में सबसे तीव्र गति वाला है। चतुर्वेदों में अश्वों का भी अत्यधिक गुणगान किया गया है। ऋग्वेद[19] में (दधिक्रावन, दधिक्रा) अश्व को विश्व का सर्वप्रथम अश्व घोषित किया गया है। यह सर्वज्ञ विजयी और मनुष्य को दीर्घायु प्रदान करता है।[20] यह अश्व प्रातःकालीन सूर्य का मूर्तरूप है। अश्व का युद्ध में भी उपयोग वर्णित किया गया है।

हाथी प्रेम प्रदर्शन के लिए हथिनी के पैरों के साथ अपने पैर मिलाकर चलता है।[21] अथर्ववेद के छः मंत्रों में हस्ती की तेजस्विता का वर्णन किया गया है।[22] बारहसिंगा हिरन के विषय में कहा गया है कि इसके सींग में औषधी है जो वंशपरम्परागत रोग को दूर करती है।[23] चूहे में भूमि खोदकर बिल बनाने की कला होती है। ऋग्वेद में दान दिये जाने वाले पशुओं में ऊँट का उल्लेख किया गया तथा इसे विशाल समूह में विचरण करने वाला बताया गया है।[24] यह एक भारवाहक पशु है उसकी गति तीव्र होती है और इसका उपयोग युद्धों में भी होता था।[25] अथर्ववेद में भी इसकी प्रषंसा का उल्लेख प्राप्त होता है। एतरेय ब्राम्हण में गर्दभ(खच्चर) को भी 'भारवाहक' पशु कहा गया है।[26] हंस की विशेषता का वर्णन करते हुए वेदों में कहा गया कि यह जल में सोमरस(दूध) को पी लेता है।[27] इसका निष्कर्ष यह है कि कमलनाल जल में है कमलनाल के टूटने पर उसमें जो सफेद दूध निकलता है उस दूध को हंस पी लेता है इसलिए कहा जाता है कि हंस में नीर–क्षीर विवेक की शक्ति होती है। यजुर्वेद[28] में क्रौंच(करॉकुल या कुररी) पक्षी के लिए भी उल्लेख किया गया है कि वह जल में से क्षीर पी लेता है। इस प्रकार काठक संहिता, मैत्रायणी संहिता, तैत्तिरीय ब्राम्हण में हंस को जल से सोम(दूध) को अलग करने वाला कहा गया है। साथ ही हंस पर रात्रि के अंधकार का कोई असर नही पड़ता। हंस मित्रता में दक्ष होता है झुंड में रहते हुए[29] मित्रों के साथ बोलते हुए उड़ते हैं।[30]

अथर्ववेद में वर्णन किया गया है कि पशु–पक्षियों को रोग नाशक एवं विषनाशक औषधियों का नैसर्गिक ज्ञान होता है जैसे–न्योला(नेवला) सर्प, शूकर, गरूड़, गाय, भेंड, बकरी आदि स्वयं अपने रोगों की चिकित्सा कर लेते हैं।[31]

पशु–पक्षियों में समूह में रहने की नैसर्गिक प्रवृत्ति होती है। अथर्ववेद में हंस आदि के लिए 'गणेभ्यः' के द्वारा संकेत है कि या छोटे या बड़े समूह में रहते हैं। ऊँट, गाय आदि झुंड में रहते हैं।[32] यजुर्वेद में उल्लेख किया गया है कि समुद्र के विशिष्ट ज्ञान के लिए जीव–जन्तुओं का उपयोग करें जैसे–जल के लिए मछली, गहरे जल के लिए नक्र(मगर)।[33]

पशु पक्षियों को ऋतु का भी बहुत अच्छा ज्ञान होता है तथा ऋतु के अनुसार इनकी गतिविधियॉ भी होती हैं। जैसे–बसंत में कोयल, कपिंजल(चातक), शरद के लिए–हंस, वर्तिका(बटेर), वर्षा में मोर तित्तिर (तीतर), तथा ग्रीष्म के लिए–कलपिंक(गौरेया), हेमन्त में ककर(पक्षी विशेष), शिशिर के लिए विककर (पक्षी विशेष) की विशेष गतिविधियॉ होती हैं।[34]

यजुर्वेद में पशु–पक्षियों के स्वभाव के संदर्भ में बताया गया है कि किस रंग के पशु–पक्षी सौम्य(सीधे) और किस रंग के पक्षी उग्र(तीक्ष्ण) होते हैं। जैसे–रोहित(लाल), धूमरोहित(धुमैले) एवं गहरे लाल रंग वाले पशु–पक्षी सौम्य(सरलता) गुण वाले तथा कान आदि में एक ओर या सब ओर सफेद छिद्र या दाग हो तो सौर गुण(उग्र) वाले होते हैं। थोड़ा अधिक या चारो ओर चितकबरा(पृषती) हो तो उसमें मैत्रावरूण (सौर और चान्द्रगुण) होते हैं। इस प्रकार रंगभेद से स्वभाव भेद भी होता है।[35]

ऋग्वेद एवं अथर्ववेद में पशुपालन, पशु संवर्धन एवं पशु संरक्षण पर विशेष बल दिया गया है। अथर्ववेद में दो सूक्त पशु संवर्धन एवं गोशाला से ही सम्बद्ध हैं।[36] ऋग्वेद का कथन है कि पशु संवर्धन के लिए ब्रज(गोशाला) बनाओ।[37] इसमें ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि पशु गाय, अश्व आदि पूरी सुविधा के साथ रह सकें।[38] व्रज मनुष्यों की दुग्ध आवश्यकता की पूर्ति करते हैं इसलिए इन्हें(नृपाणः) कहा गया है।[39] यजुर्वेद में गोशाला के लिए 'गोष्ठान' शब्द का प्रयोग किया गया है।[40] इस प्रकार ब्रज पशुशाला होते हैं इसलिए इसमें–बैल अश्वादि पशु बांधे जाते हैं।[41] अथर्ववेद में गोशाला के विषय में कहा गया है कि – पशुओं के बैठने की व्यवस्था हो, प्रकाश की व्यवस्था हो, सभी हृष्ट–पुष्ट रहें तथा गोशाला में पालन–पोषण की पूर्ण सुविधा हो जिससे पशु निरोगी रहते हुए दीर्घायु प्राप्त करें।[42] साथ ही अथर्ववेद में पशु संवर्धन के विषय में कहा गया कि पशुओं के लिए शुद्ध जल की व्यवस्था, शुद्ध वायु की व्यवस्था हो, सूर्य का प्रकाश उन्हें दें[43] जिससे पशु इकट्ठे होकर चले व घूमे और पशुधन की वृद्धि हो।[44] यजुर्वेद [45] में भी कहा गया है कि –'अभयं न पशुभ्यः' अर्थात् पशु निर्भय होकर विचरण करें क्योंकि पशुओं के संरक्षण से धन–धान्य एवं श्री की वृद्धि होती है।

वेदों में पशु संवर्धन एवं संरक्षण के साथ पशु हत्या की भी कड़े शब्दों में निन्दा करते हुए इसे दण्डनीय अपराध कहा गया है। गाय को 'अघन्या' अर्थात अवध्य कहा46 गया है क्योंकि गाय विराट ब्रह्म का प्रतीक मानी जाती है।[47] गो हत्या करने वालों के लिए समाज से बहिष्कृत कर देने का विधान भी वेदों में किया गया है[48] कि गायों और घोड़ों को हानि न पहुचाओ।[49] अथर्ववेद में कहा गया कि 'द्विपाद' (दो पैरों वाले), 'चतुष्पाद' (चार पैरों वाले) पशुओं की हत्या न करो।[50] यजुर्वेद में भी नाम बताते हुए कहा गया कि– गाय, नील गाय, ऊँट, भेंड, आठ पैरों वाले पशु, दो पैरों वाले, चार पैरों वाले पशुओं की हत्या नही करनी चाहिए[51] क्योंकि पशु सम्पदा की हमारे लिए अत्यधिक उपयोगिता है जैसे–बैलों से कृषि कार्य में, गाय से दूध, दही, ऊँट बैल गर्दभ से भारवाहक, अश्वों से रथ संचालन एवं युद्ध में, भेड़ों से ऊनी वस्त्र[52] गोबर से खाद, हाथी दांत से कलाकृतियॉ[53] तथा घोड़े, ऊँट आदि का सवारी के लिए उपयोग होता है।[54] तथा मृत पशुओं की खाल से चर्म उद्योग एवं जूते आदि का निर्माण होता है।[55] गाय को स्वयं मारने व मरवाने वाले तथा हरण करवाने वाले के लिए मृत्युदण्ड का भी विधान किया गया है।[56] इसी प्रकार यजुर्वेद एवं अथर्ववेद में पशु हत्या का निषेध करते हुए कहा गया है कि जो गाय या अश्व की हत्या करता है उसका सिर काट लिया जाय।[57]

निष्कर्ष

अतः पशुओं की अत्यधिक उपयोगिता के कारण ही वेदों में पशुओं के संरक्षण एवं संवर्धन पर विशेष बल दिया गया है।

सन्दर्भ गन्थ सूची

1. *अग्निपुराण– 'एतान पञ्च। पशून अपश्यत्। पुरूषश्चवं गामविभजम् यद्पश्यत् तस्मादेते पशवः। शत.–6.2.12।*
2. *'तमेवे पन्चपशवों विभक्ता गावों अश्वाः पुरूषाः अजावयः'। अथर्व–11.2.9*
3. *यजु–13.47.51 तैत्तिरीय–4.2.10.1–4*
4. *अथर्व– 2.3.4.4*
5. *अथर्व–3.10.6*
6. *एतरेय–2.17*
7. *'सप्त ग्राम्याः पशवः सप्तारण्याः शतपथ–3.8.9.16*
8. *'एकशफाः क्षुद्राः आरण्याः पशवः। यजु.– 14.30, तैत्तिरीय–4–3–102*
9. *'अष्ठशफाः पशवः'– तांडय ब्राम्हण–15.1.8*
10. *अथर्ववेद अध्याय–9.7.1.26*
11. *यदैवोपजिघ्रन्ति, अथ जाननन्ति। शतपथ.–11.8.3. –10।।*
12. *आनृत्य शिखडिनः।–4.37.7।। ऋग्वेद–3.45.5।।*
13. *ऋग्वेद–1–191–14। अथ. 7.56.7।।*
14. *शारिपुरूषवाक् शुकः पुरूषवाक। यजु–24–33।।*
15. *कामाय पिकः। यजु.–26.39*
16. *अथर्व–20..45।*
17. *ऋग्वेद– 10.165.4।।, ऋग्वेद–7.104.22।।*
18. *तैत्तिरीय संहिता–ष्येनमायिनं मनोजवसम्–2.4.7.1।।*
19. *ऋग्वेद–7.44.4*
20. *ऋग्वेद–4.39.6, यजु.–23.32 अथर्व–20.137.3*
21. *अथर्व–6.70.2*
22. *हस्तबर्चसं प्रथताम्। अ–3.22..1.6।।*
23. *हरिणस्य–शीर्षणि भेषजम्। अ–3.7.1.2।।*
24. *ऋग्वेद–846.22।।*
25. *उष्टो–न पीपरो मृधः। ऋग्वेद–1.138.2।।*
26. *एतरेय ब्राम्हण–4.9।।*
27. *सोममद्भ्यो व्यपिबत्–हंस। यजुर्वेद–19.74।।*
28. *अदभ्यः क्षीरं व्यपिबत्–क्रुड–। यजुर्वेद–1973।।*
29. *हंसा इव श्रेणिशो यतन्ते। यजु–29.21।।*
30. *हंसैरिव सखिभिवर्वादभिः। अ–20.91.3।।*
31. *अथर्व–8.7.23.25*
32. *गणेभ्यः महागभेम्यः स्वाहा। अ–19.22.16.17।।*
33. *समुद्राय शिशुमारान्। यजु–24.21।।*
34. *बसन्ताय कविजलान्। यजु–24.20।।*
35. *रोहितो–ते सौम्याः, सवित्राः मैत्रावरूण्यः। यजु–24.2।।*
36. *अथर्व–2.26 और 3.14।।*
37. *व्रजं न पशुवर्धनाय–ऋग्वेद–9.94।।*
38. *शर्म सप्रथोगवेअश्वाय यच्छत्। ऋग्वेद–8.30.4।।*
39. *व्रजं कृणुध्वं सहि वो नृपाणः। ऋग्वेद–10.104.4।।*
40. *यजु– 1.25।।*
41. *अथ–7.53.5।।*
42. *अथर्व– 3.14.3।।*
43. *अथर्व–2.26।।*
44. *अथर्व–2.26.4।।*
45. *यजु–36.22।।*
46. *अघन्या, अ.–7.73..8।।*
47. *यजु–13.43।।*
48. *आरे ते गोधनम्, ऋग्वेद–1.11.4..10।।*
49. *ऋग्वेद–1.11..4.8।।*
50. *अथर्व–11.201.।।*
51. *यजु–13.47. से 51 तक।*
52. *इमम् ऊर्णायुम्, यजु–13.5.।।*
53. *हस्तिवर्चसम्–अ–30.22.1।।*
54. *अश्वसादय्–यजु–30.13।।*
55. *त्वचं पशूनाम्–यजु–13.50।।*
56. *कौटिल्य अर्थशास्त्र–गैरोला संस्करण, चौखम्भा वाराणसी– 1977, पृ0269 'स्वयं हन्ता घातयिता हर्ता हारयिता च वहयः।।*
57. *अथर्व–'यो अध्यन्याया–तेषां शीर्षाणि हरसायि वृश्च'। अथर्व–8.3.15.16।। 58. 'वदों में विज्ञान'। डॉ0 बलराज शर्मा, दिल्ली–1991।*
58. *'वेदों में विज्ञान' : डॉ0 बलराज शर्मा, दिल्ली–1991*
59. *'वैदिक वाड्भय में विज्ञान– डॉ0 रामेश्वर दयाल गुप्त, उज्जैन 1997।।*
60. *अथर्ववेद का सांस्कृतिक अध्ययनं–डॉ0 कपिल देव द्विवेदी–1988।।*